संचिता दे

पूर्व छात्रा

हिंदी विभाग

संदिकै बालिका महाविद्यालय, गुवाहाटी, असम

विरह

सावन आयो बरसात लेकर,
भीगा हुआ है सारा संसार।
विरह की आग कुछ इस प्रकार लगी;
अग्नि भी हैं भयभीत ।

पल-पल उमर घटती जावे
चिन्तित है ये बावरा मन;
न जानें कब समय थम जाएं
मिलन का स्वप्न रह जावे अधूरा।

हृदय में छपी नाम है तुम्हारी
सांसे बार-बार ये बतावे,
प्रिय बिन जीवन है अधूरी -
उनपे प्राण भी बलिहारी।
जिनके चिंतन से यह संसार लागे फीका
उनकी श्री चरणों की दासी हैं संचिता।।

अनुराग

कभी कभी मुझे यह लगता है-
कि प्रतीक्षा समाप्त हुई अब मेरी,
जबसे मैंने पहचाना तुमको;
तबसे मन में हैं उमंग प्यारी।।
बिन बोले तुमने कह दिया अपनी मन की बात
पर समझ ही न पाई मैं बाबरी तुमको।
शब्दों के बिना ही जताना मोहब्बत ,
यह कला तुम सीखा देना सबको।
वे कहते हैं मिलन हो न पाएगी हमारी
परंतु कैसे यह समझाए उन्हें की दोस्ती पक्की है तुम्हारी।
नहीं कहेंगे कि तुम बन जाओ मेरे,
पर हृदय ने कहाँ कि तुम हो सबसे न्यारे।।